नबी करीम ﷺ की सीरत और हमारी ज़िन्दगी

मुफ्ती तकी उस्मानी (दब).

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नबी करीमﷺ का तज़किरा बाइसे सादत

बारह रबीउल अव्वल हमारे मुआशरे, हमारे मुल्क और खास कर बरे सगीर में बा-कायदा एक जशन और एक त्योहार की शक्ल इख्तीयार कर गई हे, जब रबीउल अव्वल का महीना आता हे तो सारे मुल्क में सीरतुन्नबी और मीलादुन्नबी का एक गैर मुतनही सिलसिला शुरू हो जाता हे, ज़ाहिर हे की नबी करीमﷺ का मुबारक तज़किरा इतनी बडी सादत हे की उस्के बराबर कोई और सादत नहीं हो सकती, लेकिन मुश्किल ये हे की हमारे मुआशरे में आपके मुबारक तज़किरा को इस रबीउल अव्वल के महीने के साथ बल्की सिर्फ बारह रबीउल अव्वल के साथ मख्सूस कर दिया गया हे, और ये कहा जाता हे की चुकी बारह रबीउल अव्वल को नबी करीमﷺ

की विलादत हुई, इसलिए आपका यौमे विलादत मनाया जाएगा, और इस्मे आपकी सीरत और विलादत का बयान होगा, लेकिन ये सब कुछ करते वकत हम ये बात भूल जाते हे की जिस जाते अक्दसﷺ की सीरत का ये बयान हो रहा हे, और जिस जाते अक्दसﷺ की विलादत का ये जशन मनाया जा रहा हे, खुद उस जाते अक्दसﷺ की तालीम क्या हे? और उस तालीम के अन्दर इस किस्म का तसव्वुर मौजूद हे या नहीं?

तारीखे इन्सानियत का अज़ीम वाकिया.

इस्मे किसी मुसल्मान को शुबह नहीं हो सकता की नबी करीमﷺ का इस दुन्या में तशरीफ लाना, तारीखे इन्सानियत का इतना अज़ीम वाकिया हे की इस्से ज्यादा अज़ीम, इस्से ज्यादा मसर्रत वाला, इस्से ज़्यादा मुबारक और मुकद्दस वाकिया इस रूए जमीन पर पेश नहीं आया, इन्सानियत को नबी करीमﷺ की तालीमात का नूर मिला, आपकी मुकद्दस शख्सियत की बरकते नसीब हुई, ये इतना बडा वाकिया हे की तारीख का और कोई

वाकिया इतना बडा नहीं हो सकता, और अगर इस्लाम में किसी का यौमे पैदाइश मनाने का कोई तसव्वुर होता तो सरकारे नबी करीमﷺ के यौमे पैदाइश से ज्यादा कोई दिन इस बात का मुस्तहिक नहीं था की उस्को मनाया जाए, और उस्को ईद करार दिया जाए, लेकिन नुबुव्वत के बाद आप 23 साल इस दुन्या में तशरीफ फरमा रहे, और हर साल रबीउल अव्वल का महीना आता था, लेकिन ना सिर्फ ये की आपने बारह रबीउल अव्वल को यौमे पैदाइश नहीं मनाया बल्की आपके किसी सहाबी के ख्याल में भी ये नहीं गुज़रा की चुकी बारह रबीउल अव्वल आपकी पैदाइश का दिन हे, इसलिए इस्को किसी खास तरीके से मनाना चाहिएं.

बारह रबीउल अव्वल और सहाबा किराम (रदी)

इस्के बाद सरकरे नबी करीमﷺ इस दुन्या से तशरीफ ले गए, और तकरीबन एक लाख पच्चीस हज़ार सहाबा किराम (रदी) इस दुन्या में छोड गए, वे सहाबा किराम (रदी) ऐसे थे की सरकारे नबी करीमﷺ के एक साँस के

बदले अपनी पूरी जान निछावर करने के लिए तैयार थे, आपके जाँनिसार, आप पर फिदाकार, आपके आशिक थे, लेकिन कोई एक सहाबी ऐसा नहीं मिलेंगा जिसने एहतिमाम करके ये दिन मनाया हो, या इस दिन कोई जल्सा आयोजित किया हो, या कोई जुलूस निकाला हो, या कोई लाइटिंग किया हो, या कोई झंडिया सजाई हो, सहाबा किराम (रदी) ने ऐसा क्यूं नहीं किया? इसलिय की इस्लाम कोई रस्मो का दीन नहीं हे, जैसा की दूसरे मजहब वाले हे की उन्के यहा चन्द रस्मो को अदा करने का नाम दीन हे, जब वे रस्मे अदा करले तो बस फिर छुट्टी हो गई, बल्की इस्लाम अमल का दीन हे, और ये तो जन्म-रोग हे, ये की पैदाइश से लेकर मरते दम तक हर इन्सान अपनी इस्लाह की फिकर में लगा रहे, और सरकारे नबी करीमﷺ की सुन्नत की इत्तीबा में लगा रहे.

"क्रिसमस" की इब्तिदा

यौमे पैदाइश मनाने का ये तसव्वुर हमारे यहा ईसाइयो से आया हे, हज़रत ईसा (अलै) का यौमे पैदाइश क्रिसमस

के नाम से 25 दिसम्बर को मनाया जाता हे, तारीख उठाकर देखेंगे तो मालूम होगा की हज़रत ईसा (अलै) के आसमान पर उठाये जाने के तकरीबन तीन सौ साल तक हज़रत ईसा (अलै) के यौमे पैदाइश मनाने का कोई तसव्वुर नहीं था, आपके हवारियों और सहाबा किराम (रदी) में से किसी ने ये दिन नहीं मनाया, तीन सौ साल के बाद कुछ लोगों ने ये बिद्दात शुरू कर दी, और ये कहा की हम हज़रत ईसा (अलै) का यौमे पैदाइश मनाएंगे, उस वकत भी जो लोग दीने ईसवी पर पूरी तरह अमल पर थे उन्होंने उनसे कहा की तुमने ये सिलसिला क्यूं शुरू किया हे? हज़रत ईसा (अलै) की तालीमत में तो यौमे पैदाइश मनाने का कोई ज़िकर नहीं हे, उन्होंने जवाब दिया की इस्मे क्या हर्ज़ हे? ये कोई ऐसी बुरी बात तो नहीं हे, बस हम इस दिन जमा हो जाएंगे, और हज़रत ईसा (अलै) का ज़िकर करेंगे, उन्की तालीमात को याद दिलाएंगे, और उस्के ज़रिए से लोगों में उन्की तालीमात पर अमल करने का शौक पैदा होगा, इसलिए हम कोई

गुनाह का काम तो नहीं कर रहे हे, चुनांचे ये कह कर ये सिलसिला शुरू कर दिया.

"क्रिसमस" की मौजूदा सूरते हाल

चुनांचे शुरू-शुरू में तो ये हुआ की जब 25 दिसम्बर की तारीख आती तो चर्च में एक इजतेमा होता, एक पादरी खडे होकर हज़रत ईसा (अलै) की तालीम और आपकी सीरत बयान कर देते, उस्के बाद इजतेमा बरखास्त हो जाता, गोया की मासूम तरीके पर ये सिलसिला शुरू हुआ, लेकिन कुछ अरसा गुज़रने के बाद उन्होंने सोचा की हम पादरी की तकरीर करा देते हे, मगर वह खुश्क किस्म की तकरीर होती हे, जिस्का नतीजा ये हे की नौजवान और शौकीन मिजाज लोग तो इस्मे शरीक नहीं होते, इसलिए इस्को जरा दिलचस्प बनाना चाहिएं ताकी लोगों के लिए दिलकश हो, और उस्को दिलचस्प बनाने के लिए इस्मे मौसीकी होनी चाहिएं, चुनांचे उस्के बाद मौसीकी पर नजमे पढी जाने लगी, फिर उन्होंने देखा की मौसीकी से भी काम नहीं चल रहा हे, इसलिए इस्मे नाच-गाना भी होना चाहिएं, चुनांचे फिर नाच-

गाना भी उस्मे शामिल हो गया, फिर सोचा की इस्मे कुछ तमाशे भी होने चाहिएं, चुनांचे हसी मज़ाक के खेल तमाशे शामिल हो गए, चुनांचे होते-होते ये हुआ की वह क्रिसमस जो हज़रत ईसा (अलै) की तालीमात बयान करने के नाम पर शुरू हुआ था, अब वह आम जशन की तरह एक जशन बन गया और उस्का नतीजा ये हे की नाच गाना उस्मे मौसीकी, उस्मे शराब नोशी, उस्मे जुवे बाजी, उस्मे गोया की अब दुन्या भर की सारी खुराफात क्रिसमस में शामिल हो गई, और हज़रत ईसा (अलै) की तालीमात पीछे रह गई.

"क्रिसमस" का अंजाम

अब देख लिजिएं की मगरिबी मुल्को में जब क्रिसमस का दिन आता हे, तो उस्मे क्या तूफान बरपा होता हे, इस एक दिन में इतनी शराब पी जाती हे की पूरे साल इतनी शराब नहीं पी जाती, इस एक दिन में इतने हादसात होते हे की पूरे साल इतने हादसात नहीं होते, उसी एक दीन में औरतो के साथ बलात्कार इतना होता हे की पूरे साल

इतनी वारदात नहीं होती, और ये सब कुछ हज़रत ईसा (अलै) के यौमे पैदाइश के नाम पर हो रहा हे.

मीलादुन्नबी की शुरूआत

अल्लाह तआला इन्सानी नफसियात और उस्की कमजोरियो से वाकिफ हे, अल्लाह तआला ये जानते थे की अगर उस्को जरा सा शोशा दिया गया तो ये कहा से कहा बात पोहुंच जाएगा, इसलिए किसी दिन के मनाने का कोई तसव्वुर नहीं रखा, जिस तरह "क्रिसमस" के साथ हुआ उसी तरह यहा भी यही हुआ की किसी बादशाह के दिल में ख्याल आ-गया की जब ईसाई लोग हज़रत ईसा (अलै) का यौमे पैदाइश मनाते हे तो हम नबी करीमﷺ का यौमे पैदाइश क्यूं ना मनाए? चुनांचे ये कह कर उस बादशाह ने मीलाद का सिलसिला शुरू कर दिया, शुरू में यहा भी यही हुआ की मीलाद हुआ जिस्मे नबी करीमﷺ की सीरत का बयान हुआ, और कुछ नाते पढी गई, लेकिन अब आप देखले की कहा तक नौबत पोहुंच चुकी हे.

ये हिन्दुवाना जशन हे.

ये तो नबी करीमﷺ का मोजिज़ा हे की चौदह सौ साल गुज़रने के बा-वजूद अल्लाह का शुक्र हे की वहा तक नौबत नहीं पोहची जिस तरह ईसाइयो के यहा पोहुंच चुकी हे, लेकिन अब भी देखलो की सडको पर क्या हो रहा हे, किस तरह रोज़ा-ए-अक्दस की शबीहे खडी की हुई हे, किस तरह काबे-शरीफ की शबीहे खडी हुई हे, किस तरह लोग उस्के इर्द गिर्द तवाफ कर रहे हे, किस तरह उस्के चारो तरफ रिकार्डिंग हो रही हे, किस तरह लाइटिंग किया जा रहा हे, और किस तरह झंडिया सजाई जा रही हे, मआज़ल्लाह (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) ऐसा मालूम हो रहा हे की ये सरकारे नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा का कोई जशन नहीं हे, बल्की जैसे हिन्दुओ और ईसाइओ के आम जशन होते हे इस तरह का कोई जशन हे और रफ्ता-रफ्ता सारी खराबियां इस्मे जमा हो रही हे.

ये इस्लाम का तरीका नहीं

सब्से बडी खराबी ये हे की ये सब कुछ दीन के नाम पर

हो रहा हे, और ये सब कुछ नबी करीमﷺ के मुकद्दस नाम पर हो रहा हे, और सब कुछ ये सोच कर हो रहा हे की ये बडे अज़र और सवाब का काम हे, और ये ख्याल कर रहे हे की आज बारह रबीउल अव्वल को लाइटिंग करके, और अपनी इमारतो को रौशन करके, और अपने रास्तो को सजा कर हमने नबी करीमﷺ के साथ मुहब्बत का हक अदा कर दिया, और अगर उनसे पूछा जाए की आप दीन पर अमल नहीं करते? तो जवाब देते हे की हमारे यहा तो मीलाद होता हे, हमारे यहा तो नबी करीमﷺ के यौमे पैदाइश पर लाइटिंग होता हे, इस तरह दीन का हक अदा हो रहा हे, हालांकी ये तरीका इस्लाम का तरीका नहीं हे, नबी करीमﷺ का तरीका नहीं हे, सहाबा किराम (रदी) का तरीका नहीं हे, और अगर इस तरीके में खैर और बरकत होती तो अबू बकर सिद्दीक (रदी), फारूके आज़म (रदी), उस्माने गनी (रदी) और अली मुर्तजा (रदी) इस्से चूकने वाले नहीं थे.

बनिये से सियाना सो बावला

मेरे वालिद हज़रत मुफ्ती मुहम्मद शफी साहिब (रह) हिन्दी ज़बान की एक मिसाल और कहावत सुनाया करते थे की उन्के यहा ये कहावत बहुत मशहूर हे की "बनिये से सियाना सो बावला" यानी अगर कोई शख्स ये दावा करे की में तिजारत में बनिये से ज़्यादा सियाना और होशियार हूं, और उस्से ज़्यादा तिजारत जानता हूं, तो वह पागल हे, इसलिए की हकीकत में तिजारत के अन्दर कोई शख्स बनिये से ज़्यादा सियाना नहीं हो सकता, ये कहावत सुनानें के बाद हज़रत वालिद साहिब फरमाते की जो शख्स ये दावा करे की में सहाबा किराम (रदी) से ज़्यादा नबी करीमﷺ का आशिक हूं और सहाबा किराम (रदी) से ज्यादा मुहब्बत रखने वाला हूं, वह हकीकत में पागल हे, बेवकूफ और अहमक हे, इसलिए की सहाबा किराम (रदी) से बडा आशिक और मुहब्बत करने वाला कोई और नहीं हो सकता.

नबी करीमﷺ के आने का मक्सद क्या था?

सहाबा किराम (रदी) का ये हाल था की ना जुलूस हे, ना जल्सा हे, ना लाइटिंग हे, ना झन्डी हे, और ना सजावट हे, लेकिन एक चीज़ हे, वो ये की सरकारे नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा जिन्दगियों में रची हुई हे, उन्का हर दिन सीरते तैयबा का दिन हे, उन्का हर लम्हा सीरते तैयबा का लम्हा हे, उन्का हर काम सीरते तैयबा का काम हे, कोई काम ऐसा नहीं था जो सरकारे नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा से खाली हो, चुकी वे जानते थे की सरकारे नबी करीमﷺ इसलिए दुन्या में तशरीफ नहीं लाए थे की अपना जन्मदिन मनवाये और अपनी तारीफ कराएं, अपनी शान में कसीदे पढवाएं, अल्लाह ना-करे अगर ये मकसूद होता तो जिस वकत कुफ्फारे मक्का ने आपको ये पेशकश की थी की अगर आप सरदार बन्ना चाहते हे तो हम आपको अपना सरदार बनाने के लिए तैयार हे, अगर आप माल और दौलत के तलबगार हे तो माल और दौलत के ढेर आपके कदमो में लगाने के लिए तैयार हे, अगर आप हुस्न

और जमाल के तलबगार हे तो अरब का चुना हुआ हुस्न और जमाल आपकी खिदमत में नज़र किया जा सकता हे, बा-शरते की आप अपनी तालीमात को छोड दे, और ये दावत का काम छोड दे, अगर नबी करीमﷺ को ये चिझे मतलूब होती तो आप उन्की पेशकश को कुबूल कर लेते, सरदारी भी मिलती, रूपया पैसा भी मिल जाता और दुन्या की सारी नेमते हासिल हो जाती, लेकिन सरकारे नबी करीमﷺ ने फरमाया की अगर तुम मेरे एक हाथ में सूरज और एक हाथ में चाँद भी लाकर रख दोगें, तब भी में अपनी तालीमात से हटने वाला नहीं हूं, क्या आप दुन्या में इसलिए तशरीफ लाए थे की लोग मेरे नाम पर ईद मीलादुन्नबी मनाए? बल्की आपके आने का मन्शा वो हे जो कुरान करीम ने इस आयत (सुरे अल अहज़ाब/21) में बयान फरमया की तर्जुमा - 'यानी हमने नबी करीमﷺ को तुम्हारे पास बेहतरीन नमूना बनाकर भेजा हे, ताकी तुम उन्की नकल उतारो, और उस शख्स के लिए भेजा हे जो अल्लाह पर ईमान रखता हो, और

आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो, और अल्लाह को कसरत से याद करता हो'.

इन्सान नमूने का मोहताज हे

सवाल ये पैदा होता हे की नमूने की क्या ज़रूरत हे? इसलिए की अल्लाह तआला ने अपनी किताब नाज़िल फरमा दी थी, हम उस्को पढकर उस्के अहकाम पर अमल कर लेते? बात असल में ये हे की नमूने भेजने की ज़रूरत इसलिए पेश आई की इन्सान की फितरत ये हे की सिर्फ किताब उस्की इस्लाह के लिए और उस्को कोई फन, कोई इल्म और हुनर सिखाने के लिए काफी नहीं होती, बल्की इन्सान को सिखाने के लिए किसी मुरब्बी के अमली नमूने की ज़रूरत होती हे, जब तक नमूना सामने नहीं होगा, उस वकत तक महज़ किताब पढने से कोई इल्म और कोई फन नहीं आएगा, ये चिझे अल्लाह तआला ने उस्की फितरत में दाखिल फरमाई हे.

डॉक्टर के लिए 'हाउस जॉब' लाज़िम क्यूं?

एक इन्सान अगर ये सोचे की मैडिकल साइन्स पर किताबे लिखी हुई हे, में उन किताबो को पढकर दूसरो

का इलाज शुरू कर दू वह पढना भी जानता हे, समझदारी भी हे, जहीन भी हे, और उसने किताबे पढकर इलाज शुरू कर दिया, तो सिवाये कबरस्तान आबाद करने के कोई और खिदमत अंजाम नहीं देगा, चुनांचे दुन्या भर का कानून ये हे की अगर किसी शख्स ने एम.बी.बी.एस. की डिग्री हासिल करली, उस्को एक मुद्दत तक आम प्रैक्टिस करने की इजाज़त नहीं जब तक वह एक मुद्दत तक हाउस जॉब ना-करे, और जब तक किसी अस्पताल में किसी माहिर डॉक्टर की निगरानी में अमली नमूना नहीं देखेगा, उस वकत तक सही डॉक्टरी नहीं कर सकता, इसलिए की उसने अबतक बहुत सी चिझों को सिर्फ किताब में पढा हे, अभी उस्के अमली नमूने उस्के सामने नहीं आए, अब मरज़, किताबी तफ्सील के साथ, उस्की अमली सूरत मरीज़ की शक्ल में देखकर उसे सही मायने में इलाज करना आएगा उस्के बाद उस्को आम प्रैक्टिस की इजाज़त दे-दी जाएगी.

किताब पढकर कोरमा नहीं बना सकते

खाने पकाने की किताबे बाज़ार में छपी हुई मौजूद हे, और उन्मे हर चिझे की तरकीब लिखी हुई हे की बिरयानी इस तरह बनती हे, पुलाव इस तरह बनता हे, कबाब इस तरह बनते हे, कोरमा इस तरह बनता हे, अब एक आदमी हे जिसने आज तक कभी खाना नहीं बनाया, किताब सामने रखकर और उस्मे तरकीब पढकर कोरमा बना ले, अल्लाह जाने वह क्या चिझे तैयार करेगा, हा अगर किसी उस्ताद और जानने वाले ने उस्को सामने बिठा कर बता दिया की देखो कोरमा इस तरह बनता हे, और अमली तरबियत दे-दी, फिर वह शानदार तरीके से बना लेगा.

तनहा किताब काफी नहीं

मालूम हुआ की अल्लाह तआला ने इन्सान की फितरत ये रखी हे की जब तक किसी मुरब्बी का अमली नमूना उस्के सामने ना हो, उस वकत तक वह सही रास्ते पर सही तरीके पर नहीं आसकता, और कोई इल्म और फन सही तौर पर नहीं सीख सकता इस वास्ते अल्लाह तआला ने

अंबिया (अलै) का जो सिलसिला जारी फरमाया, वह हकीकत में इसी मक्सद को बनाने के लिए था, हमने किताब तो भेज दी लेकिन तनहा किताब तुम्हारी रेहनुमायी के लिए काफी नहीं होगी, जब तक उस किताब पर अमल करने के लिए नमूना तुम्हारे सामने ना हो, इसलिए कुराने करीम ये कह रहा हे की हमने नबी करीमﷺ को इस गर्ज़ के लिए भेजा हे की तुम ये देखो की ये कुरान करीम तो हमारी तालीमात हे, और ये नबी (ﷺ) हमारी तालीमात पर अमल करने का नमूना हे.

तालीमाते नब्वी का नूर चाहिएं

कुरान करीम ने एक और जगह पर क्या खूबसूरत जुम्ला इरशाद फरमाया की तर्जुमा - 'यानी तुम्हारे पास अल्लाह तआला की तरफ से एक तो खुली किताब यानी कुरान आया हे, और उस्के साथ एक नूर आया हे'. इस्से इशारा इस बात की तरफ कर दिया की अगर किसी के पास किताब मौजूद हे, और किताब में सब कुछ लिखा हे, लेकिन उस्के पास रोशनी नहीं हे, ना सूरज की रोशनी हे,

ना दिन की रोशनी हे, ना बिजली की रोशनी हे, ना चिराग की रोशनी, बल्की अन्धेरा हे, इसलिए अब, रोशनी के बगैर इस किताब से फायदा नहीं उठा सकता, इसी तरह अगर दिन की रोशनी मौजूद हे, बिजली की रोशनी मौजूद हे, लेकिन आंख की रोशनी नहीं हे, तब भी किताब से फायदा नहीं उठाया जा सकता, इसी तरह हमने कुरान करीम के साथ हज़रत मुहम्मदﷺ की तालीमात का नूर भेजा हे जब तक तालीमात का ये नूर तुम्हारे पास नहीं होगा, तुम कुरान करीम नहीं समझ सकोगे, और उस पर अमल करने का तरीका तुम्हे नहीं आएगा.

नबी करीमﷺ की तालीमात सरापा नूर हे

अब बाज़ न-अहल और कदर ना पहचान्ने वाले लोग इस आयत का मतलब ये निकालते हे की नबी करीमﷺ जाती एतिबार से बशर नहीं थे, बल्की 'नूर' थे, ये तो देखो की ये बिजली का नूर, ये ट्यूब लाईट का नूर, नबी करीमﷺ की तालीमात के नूर के आगे क्या हैसियत रखता हे? हकीकत में इस आयत में ये बताना हे की नबी करीमﷺ

जो कुछ तालीम दे रहे हे, ये वो नूर हे जिस्के ज़रिए तुम किताबे मुबीन पर सही सही अमल कर सकोगे और इस नमूने के बगैर तुम्हे सही तरह अमल करने में दुश्वारी होगी, अल्लाह तआला ने आपको इसलिए नुबुव्वत अता फरमा कर भेजा की आपकी तालीमात का नूर अल्लाह की किताब की अमली तशरीह करेगा, ये तुम्हे तरबियत देगा, और तुम्हारे सामने एक अमली नमूना पेश करके दिखाएगा की ये देखो, अल्लाह तआला की किताब पर इस तरह अमल किया जाता हे, और अब हमने नबी करीमﷺ की ज़ात को एक मुकम्मल और कामिल नमूना बना दिया, ये ऐसा नमूना हे की इन्सानियत इस्की नज़ीर पेश करने से आजिज़ हे, और ये नमूना इसलिए भेजा की तुम इस्को देखो, और इस्की नकल उतारो, तुम्हारा बस यही काम हे.

आपकी जात ज़िन्दगी के हर शोबे का नमूना थी

अगर तुम बाप हो तो ये देखो की फातिमा के बाप(ﷺ) क्या करते थे? अगर तुम शौहर हो तो ये देखो की आयशा और खदीजा के शौहर(ﷺ) क्या करते थ? अगर तुम

हाकिम हो तो ये देखो की मदीना के हाकिम(ﷺ) ने किस तरह हुकूमत की, अगर तुम मज़दूर हो तो ये देखो की मक्का की पहाडियो पर बकरीया चराने वाले मजदूर(ﷺ) क्या करते थे? अगर तुम ताजिर हो तो ये देखो की सरकारे नबी करीमﷺ ने मुल्क शाम की तिजारत में क्या तरीका इख्तीयार फरमाया? आपने तिजारत भी की, खेती-बाडी भी की, मजदूरी भी की, सियासत भी की, मईशत भी की, ज़िन्दगी का कोई शोबा नहीं छोडा जिस्मे नबी करीमﷺ की ज़ात नमूने के तौर पर मौजूद ना हो, बस तुम इस नमूने को देखो और इस्की पैरवी करो, इसी मक्सद के लिए हमने नबी करीमﷺ को भेजा हे, इसलिए नहीं भेजा की आपका यौमे पैदाइश मनाया जाए, इसलिए नहीं भेजा की आपका जशन मना कर ये समझ लिया जाए की हमने उन्का हक अदा कर दिया, बल्की उन्की ऐसी इत्तीबा करो, जैसी सहाबा किराम (रदी) ने इत्तीबा करके दिखाई.

मजलीस का एक अदब

सहाबा किराम (रदी) को हर वकत इस बात का ध्यान था की नबी करीमﷺ की इत्तीबा किस तरह हो? सहाबा किराम (रदी) वैसे ही सहाबा किराम (रदी) नहीं बन गए, सुनिए, एक मरतबा नबी करीमﷺ मस्जिदे नब्वी में खुतबा दे रहे थे, खुतबे के दौरान आपने देखा की कुछ लोग मस्ज़िद के किनारो पर खडे हुए हे, जैसा की आज कल भी आपने देखा होगा, की जब कोई तकरीर या जल्सा होता हे तो कुछ लोग किनारो पर खडे हो जाते हे, वे लोग ना तो बैठते हे और ना जाते हे, इस तरह किनारो पर खडा होना मजलीस के अदब के खिलाफ हे, अगर तुम्हे सुन्ना हे तो बैठ जावो और अगर नहीं सुन्ना हे तो जावो, अपना रास्ता देखो, इसलिए की इस तरह खडे होने से बोलने वाले का जेहन भी तशवीश में मुब्ताला होता हे, और सुनने वालो का जहेन भी तितर बितर हो जाता हे.

इत्तीबा हो तो ऐसी

नबी करीमﷺ ने किनारो पर खडे हुए लोगों से खिताब

करते हुए फरमाया की "बैठ जावो" जिस वकत आपने ये हुक्म दिया उस वकत हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद (रदी) बाहर सडक पर थे और मस्जिदे नब्वी की तरफ आ-रहे थे, और अभी मस्ज़िद में दाखिल नहीं हुए थे, की उस वकत उन्के कान में नबी करीमﷺ की ये आवाज़ आई की "बैठ जावो" आप वहीं सडक पर बैठ गए, खुतबे के बाद जब नबी करीमﷺ से मुलाकात हुई तो आपने फरमाया की मैंने तो बैठने का हुक्म उन लोगों को दिया था जो यहा मस्ज़िद के किनारो पर खडे हुए थे, लेकिन तुम तो सडक पर थे, और सडक पर बैठने को तो मैंने नहीं कहा था, तुम वहा क्यूं बैठ गए? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद (रदी) ने जवाब दिया की जब नबी करीमﷺ का ये इरशाद कान में पड गया की "बैठ जावो" तो फिर अब्दुल्लाह बिन मसउद की मजाल नहीं थी की वह एक कदम आगे बढाये, और ये बात नहीं थी की हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद (रदी) इस बात को जानते नहीं थे की नबी करीमﷺ मुझे सडक पर बैठने का

हुक्म नहीं दे रहे थे, बल्की असल बात ये थी की जब नबी करीमﷺ का ये इरशाद कान में पड गया की "बैठ जावो" तो अब उस्के बाद कदम नहीं उठ सकता, सहाबा किराम (रदी) की इत्तीबा का ये हाल था, वैसे ही सहाबा किराम (रदी) नहीं बन गए थे, इश्क और मुहब्बत के दावेदार तो बहुत हे लेकिन उन सहाबा किराम (रदी) जैसा इश्क कोई लेकर तो आए.

मैदाने जंग में अदब का लिहाज़

मैदाने उहद में हज़रत अबू दुजाना (रदी) ने देखा की सरकारे नबी करीमﷺ की तरफ तीर बरसाये जा रहे हे, तीरो की बारिश हो रही हे, हज़रत अबू दुजाना (रदी) ये चाहते हे की नबी करीमﷺ के सामने आड बन जाए, लेकिन अगर उन तीरो की तरफ सीना करके आड बनते हे तो नबी करीमﷺ की तरफ पुश्त हो जाती हे और ये गवारा नहीं की मैदाने जंग में भी नबी करीमﷺ की तरफ पुश्त हो जाए, चुनांचे आपने अपना सीना नबी करीमﷺ की तरफ और पुश्त कुफ्फार के तीरो की तरफ कर दी,

और इस तरह तीरो को अपनी पुश्त पर ले रहे थे, ताकी जंग के मैदान में भी ये बे-अदबी ना हो की नबी करीमﷺ की तरफ पुश्त हो जाए.

हज़रत फारूके आज़म (रदी) का वाकिया

हज़रत फारूके आज़म (रदी) ने एक मरतबा मस्जिदे नब्वी से बहुत दूर मकान ले लिया था, वहा रहने लगे थे, और दूरी की वजह से वहा से रोजाना मस्जिदे नब्वी में हाज़री देना मुश्किल था, चुनांचे उन्के करीब एक साहिब रहते थे, उनसे ये तय कर लिया था की एक दिन तुम मस्जिदे नब्वी में चले जाया करो, और एक दिन में जाया करूंगा, जिस दिन तुम जावो उस दिन वापस आकर मुझे ये बताना की आज नबी करीमﷺ ने क्या क्या बाते इरशद फरमाई, और जब में जाया करूंगा ते में वापस आकर तुम्हे बता दिया करूंगा की नबी करीमﷺ ने क्या क्या बाते इरशाद फरमाई, ताकी सरकारे नबी करीमﷺ की ज़बाने मुबारक से निकली हुई कोई बात छूटने ना पाए, इस तरह सहाबा किराम ने नबी करीमﷺ की छोटी छोटी

बातो और सुन्नतो पर जान दी हे.

अपने आका की सुन्नत नहीं छोड सकता

हज़रत उस्मान गनी (रदी) सुलह हुदैबिया के मौके पर मामलात तय करने के लिए नबी करीमﷺ के ऐलची बन कर मक्का मुकर्रमा तशरीफ ले गए, वहा जाकर अपने चचेरे भाई के घर ठहर गए, और जब सुबह के वकत मक्का के सरदारो से बात चीत के लिए घर से जाने लगे तो उस वकत हज़रत उस्मान गनी (रदी) का पायजामा टखनो से उपर आधी पिन्डली तक था, नबी करीमﷺ का फरमान ये था की टखनो से नीचे पायजामा लटकाना तो बिल्कुल ना जायज़ हे, अगर टखनो से उपर हो तो जायज़ हे, लेकिन नबी करीमﷺ का आम मामूल और आदत ये थी की आप आधी पिन्डली तक अपना पायजामा रखते थे, इस्से नीचे नहीं होता था, चुनांचे हज़रत उस्मान गनी (रदी) के चचेरे भाई ने कहा की जनाब अरबो का दस्तूर ये हे की जिस शख्स का पायजामा और तहबन्द जितना लटका हुआ हो, उतना ही उस आदमी को बडा समझा

जाता हे, और सरदार किस्म के लोग अपनी लूँगी (और पायजामे) को लटका कर रखते हे, इसलिए अगर आप पायजामे को इस तरह ऊँचा पहन कर उन लोगों के सामने जाएंगे तो इस सूरत में उन्की नजरो में आपकी वकअत नहीं होगी, और बात चीत में जान नहीं पडेगी हज़रत उस्मान गनी (रदी) ने जब अपने चचेरे भाई की बाते सुनी तो एक ही जवाब दिया, फरमाया की 'नहीं में अपना इज़ार (पायजामा, लूँगी) इस्से नीचा नहीं कर सकता, मेरे आका सरकारे नबी करीमﷺ का इज़ार ऐसा ही हे'. यानी अब ये लोग मुझे अच्छा समझे या बुरा समझे, मेरी इज़्ज़त करे, या बेइज़्ज़ती करे, जो चाहे करे मुझे इस की कोई परवाह नहीं, में तो नबी करीमﷺ का इज़ार देख चुका हूं, और आपका जैसा इज़ार हे, वैसा ही मेरा रहेगा, इसे मे तब्दील नहीं कर सकता.

इन अहमको की वजह से सुन्नत छोड दू?

हज़रत हुजैफा बिन यमान (रदी) ईरान को फतह करने वाले, जब ईरान में किसरा पर हमला किया गया तो

उसने बात चीत के लिए आपको अपने दरबार में बुलाया, आप वहा तशरीफ ले गए, जब वहा पोहचे तो तवाजो के तौर पर पहले उन्के सामने खाना लाकर रखा गया, चुनांचे आपने खाना शुरू किया, खाने के दौरान आपके हाथ से एक निवाला नीचे गिर गया, नबी करीमﷺ की तालीम ये हे की अगर निवाला नीचे गिर जाए तो उस्को जाया ना-करो वह अल्लाह का रिज़्क हे, और ये मालूम नहीं की अल्लाह तआला ने रिज़्क के कौन से हिस्से में बरकत रखी हे, इसलिए उस निवाले की नाकदरी ना-करो, बल्की उस्को उठालो, अगर उस्के उपर कुछ मिट्टी लग गई हे तो उस्को साफ कर लो, और फिर खालो, चुनांचे जब निवाला नीचे गिरा तो हज़रत हुजैफा (रदी) को ये हदीस याद आ-गई, और आपने उस निवाले को उठाने के लिए नीचे हाथ बढाया, आपके बराबर में एक सहाब बैठे थे, उन्होंने आपको कोहनी मार कर इशारा किया की ये क्या कर रहे हो? ये तो दुन्या की सुपर ताकत किसरा का दरबार हे, अगर तुम इस दरबार में ज़मीन पर

गिरा हुआ निवाला उठाकर खावोगे तो इन लोगों के जेहनो में तुम्हारी कोई वकअत नहीं रहेगी, और ये समझेगे की ये बडे नदीदे किस्म के लोग हे, इसलिए ये निवाला उठाकर खाने का मौका नहीं हे, आज इस्को छोड दो, जवाब में हज़रत हुजैफा बिन यमान (रदी) ने क्या अजीब जुम्ला इरशाद फरमाया की क्या में इन अहमको की वजह से सरकारे नबी करीमﷺ की सुन्नत छोड दू? चाहे ये अच्छा समझे या बुरा समझे, इज़्ज़त करे, या जिल्लत करे, या मज़ाक उडाये, लेकिन में सराकरे नबी करीमﷺ का सुन्नत नहीं छोड सकता.

किसरा के गुरूर को खाक में मिला दिया

अब बताये की उन्होंने अपनी इज़्ज़त कराई या आज हम सुन्नते छोड कर करवा रहे हे? इज़्ज़त उन्होंने ही कराई, और ऐसी इज़्ज़त कराई की एक तरफ तो सुन्नत पर अमल करते हुए निवाला उठाकर खाया, तो दूसरी तरफ ईरान के घमन्दी जो गुरूर के बुत बने हुए थे, उन्का गुरूर ऐसा खाक में मिलाया की नबी करीमﷺ ने फरमा दिया की

जिस दिन किसरा हलाक हुआ उस्के बाद कोई किसरा नहीं हे, दुन्या से उस्का नाम और निशान मिट गया.

अपना लिबास नहीं छोडेंगे

इस वाकिया से पहले ये हुआ की हज़रत हुजैफा बिन यमान और हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) जब बात चीत के लिए जाने लगे, और किसरा के महल में दाखिल होने लगे, तो उस वकत वे अपना वही सीधा सादा लिबास पहने हुए थे, चुकी लम्बा सफर करके आए थे, इसलिए हो सकता हे की वे कपडे कछ मैले हो, दरबार के दरवाजे पर जो दरबान था, उसने आपको अन्दर जाने से रोक दिया, उसने कहा की इतने बडे बादशाह किसरा के दरबार में ऐसे लिबास में जा रहे हो? और ये कह कर उसने एक जुब्बा दिया की आप ये जुब्बा पहन कर जाए, हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) ने उस दरबान से कहा की अगर किसरा के दरबार में जाने के लिए उस्का दिया हुआ जुब्बा पहनना ज़रूरी हे, तो फिर उस्के दरबार में जाने की कोई जरूरत नहीं, अगर हम जाएंगे तो इसी

लिबास में जाएंगे, और अगर उस्को इस लिबास में मिलना मन्जूर नहीं, तो फिर हमे भी उस्से मिलने का कोई शौक नहीं, इसलिए हम वापस जा रहे हे.

तलवार देख ली बाजू भी देख

उस दरबान ने अन्दर पैगाम भजा की ये अजीब किस्म के लोग आए हे, जो जब्बा लेने को तैयार नहीं, इसी दौरान हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) अपनी तलवार के उपर लिपटी हुई कतरनो को दुरूस्त करने लगे, जो तलवार के टूटे हुए हिस्से पर लिपटी हुई थी, उस चौकीदार ने तलवार देखकर कहा जरा मुझे अपनी तलवार दिखावो, आपने वह तलवार उस्को दे-दी, उसने वह तलवार देखकर कहा क्या तुम इस तलवार से ईरान को फतह करोगे? हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) ने फरमाया की अभी तक तुमने सिर्फ तलवार देखी हे तलवार चलाने वाला हाथ नहीं देखा, उसने कहा अच्छा हाथ भी दिखा दो, हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) ने फरमाया की हाथ देखना चाहते हो तो ऐसा करो की तुम्हारे पास तलवार

रोकने वाली जो सबसे ज़्यादा मज़बूत धाल हो वह मंगावा लो, और फिर मेरा हाथ देखो, चुनांचे वहा जो सबसे ज्यादा मज़बूत लोहे की धाल थी, जिस्के बारे में ख्याल किया जाता था की कोई तलवार उस्को नहीं काट सकती, वह मंगवाई गई, हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) ने फरमया की कोई शख्स इस्को मेरे सामने लेकर खडा हो जाए, चुनांचे एक आदमी उस धाल को लेकर खडा हो गया, तो हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) ने वह तलवार जिसपर कतरने लिपटी हुई थी, उस्का एक वार जो किया तो उस धाल के दो टुकडे हो गए, सब ये नज़ारा देखकर हैरान रह गए की अल्लाह जाने ये कैसी मख्लूक आ-गई हे.

ये हे ईरान को फतह करने वाले

उस्के बाद दरबान ने अन्दर ये पैगाम भेजा की ये एक अजीब और गरीब मख्लूक आई हे, जो ना तुम्हारा दिया हुआ लिबास पहनती हे, और उन्की तलवार तो बज़ाहिर टूटी फूटी नज़र आती हे, लेकिन उसने धाल के दो टुकडे कर दिये, चुनांचे थोडी देर बाद उन्को अन्दर बुलवाया

गया, किसरा के दरबार का दस्तूर ये था की वह खुद तो कुर्सी पर बैठा रहता था और सारे दरबारी सामने खडे रहते थे हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) ने किसरा से कहा की हम हज़रत मुहम्मदﷺ की तालीमात के पैरोकार हे, और आपﷺ ने हमे इस बात से मना किया हे की एक आदमी बैठा रहे और सारे आदमी उस्के सामने खडे रहे, इसलिए हम इस तरह से बात चीत करने के लिए तैयार नहीं, या तो हमारे लिए भी खुरशियाँ मंगवाई जाए, या किसरा भी हमारे सामने खडा हो, किसरा ने जब देखा की ये लोग तो हमारी तौहीन करने के लिए आ-गए, चुनांचे उसने हुक्म दिया की एक मिट्टी का टोकरा भर कर इन्के सर पर रखकर इन्को वापस रवाना कर दो, में इनसे बात नहीं करता, चुनांचे एक मिट्टी का टोकरा उन्को दे दिया गया, हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) जब दरबार से निकलने लगे तो जाते हुए ये कहा की ऐ किसरा ये बात याद रखना की तुमने ईरान की मिट्टी हमे दे-दी, ये कह कर रवाना हो गए, ईरानी लोग बडे वहम परस्त

किस्म के लोग थे, उन्होंने सोचा की ये जो कहा की "ईरान की मिट्टी हमे दे-दी" ये तो बडी बद-फाली हो गई, अब किसरा ने फौरन एक आदमी पीछे दौडाया की जावो जल्दी से वह मिट्टी का टोकरा वापस ले आओ, अब हज़रत रबई बिन आमिर (रदी) कहा हाथ आने वाले थे, चुनांचे वो ले-जाने में कामयाब हो गए, इसलिए की अल्लाह तआला ने लिख दिया था की ईरान की मिट्टी इन्ही टूटी हुई तलवार वालो के हाथ में हे.

आज मुसल्मान जलील क्यूं?

नबी करीमﷺ की सुन्नतो की इत्तीबा में, आपकी सुन्नतो की तामील में, उन हज़रात सहाबा ने दुन्या भर में लोहा मनवाया, और हम पर ये खौफ मुसल्लत हे की फलां सुन्नत पर अमल कर लिया, तो लोग क्या कहेंगे, अगर फलां सुन्नत पर अमल कर लिया तो दुन्या वाले मज़ाक उडायेंगे, इस्का नतीजा ये हे की, सारी दुन्या में आज ज़लील हो रहे हे, आज दुन्या की एक तिहाई आबादी मुसल्मानों की हे, आज दुन्या में जितने मुसल्मान हे इतने

मुसल्मान इस्से पहले कभी नहीं हुए और आज मुसल्मानों के पास जितने वसायल हे इतने वसायल इस्से पहले कभी नहीं हुए, लेकिन नबी करीमﷺ ने फरमा दिया था की एक ज़माना ऐसा आएगा की तुम्हारी तादाद तो बहुत होगी लेकिन तुम ऐसे होगे जैसे सैलाब में बहते हुए तिनके होते हे, जिनका अपना कोई इख्तीयार नहीं होता, आज हमारा ये हाल हे, की अपने दुश्मनो को राज़ी करने के लिए अपना सब कुछ कुरबान कर दिया, अपने अख्लाक छोडे, अपने आमाल छोडे, अपनी सीरते छोडी, अपने किरदार छोडे, और अपनी सूरत तक बदल डाली, सर से लेकर पाँव तक उन्की नकल उतार कर ये दिखा दिया की हम तुम्हारे गुलाम हे, लेकिन वे फिर भी खुश नहीं हे, और रोज़ाना पिटाई करते हे, कभी इसराईल पिटाई कर रहा हे, कभी कोई दूसरा मुल्क पिटाई कर रहा हे, इसलिए एक मुसल्मान जब नबी करीमﷺ की सुन्नत छोड देगा तो याद रखो उस्के लिए ज़िल्लत के सिवा कुछ नहीं हे.

हँसे जाने से जब तक डरोगे

एक शायर गुजरे हे असद मुल्तानी मरहूम, उन्होंने बडे अच्छे हकीमाना शेर कहे हे, फरमाते हे की 'किसी का आस्ताना ऊँचा हे इतना की सर झुकाकर भी ऊँचा ही रहेगा हँसे जाने से जब तक तुम डरोगे ज़माना तुम पर हँसता ही रहेगा'. जब तक तुम इस बात से डरोगे की फलां हँसेगा, फलां मजाक उडाएगा तो जमाना हँसता ही रहेगा, और देखलो की हँस रहा हे, और अगर तुमने नबी करीमﷺ के कदमे मुबारक पर अपना सर रख दिया और आपकी सुन्नतो की इत्तीबा करली तो फिर देखो की दुन्या तुम्हारी कैसी इज़्ज़त करती हे.

ईमान वाले के लिए सुन्नत की इत्तीबा लाज़िम हे

यहा एक बात और अरज कर दू, वो ये की एक सवाल पैदा होता हे की आप कहते हे की सुन्नते छोडने से ज़िल्लत होती हे, लेकिन हम देखते हे की सारे कुफ्फार और मुशरीकिन, अमरीका और दूसरे यूरपी मुल्को वाले, सबने सुन्नते छोड रखी हे, और इस्के बा-वजूद खूब तरक्की कर रहे हे, और खूब उन्की इज़्ज़त हो रही हे, उन्को क्यूं तरक्की हो रही हे? बात

असल ये हे की तुम ईमान वाले हो, तुमने हज़रत मुहम्मदﷺ का कलिमा पढा हे, तुम जब तक उन्के कदमो पर सर नहीं रखोंगे, उस वकत तक इस दुन्या में तुम्हारी पिटाई होती रहेगी, और तुम्हे इज़्ज़त हासिल नहीं होगी, काफिरो के लिए तो सिर्फ दुन्या ही दुन्या हे, वे इस दुन्या में तरक्की करे, इज़्ज़त कराएं, जो चाहे कराएं, तुम अपने आपको उनपर कियास मत करो, चौदह सौ साल की तारीख उठाकर देखले, जब तक मुसल्मानों ने नबी करीमﷺ की सुन्नतो पर अमल किया, उस वकत तक इज़्ज़त भी पाई, शौहरत भी हासिल की, सत्ता भी हासिल की, लेकिन जबसे सुन्नते छोड दी हे, उस वकत से देखलो, क्या हालत हे.

अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा ले

तकरीरे तो होती रहती हे, जल्सें भी होते रहते हे, लेकिन इस तकरीर के नतीजे में हमारे अन्दर क्या फरक वाके हुआ? इसलिए आज एक काम का अहद करे की हम इस बात का जायज़ा लेंगे की हम नबी करीमﷺ की कौन सी सुन्नत पर अमल कर रहे हे, और कौन सी सुन्नत पर अमल

नहीं कर रहे हे, और कौन सी सुन्नत ऐसी हे जिसपर हम फौरन अमल शुरू कर सकते हे, और कौन सी सुन्नत ऐसी हे जिस्मे थोडी सी तवज्जोह की ज़रूरत हे? इसलिए जो सुन्नत ऐसी हे जिसपर हम फौरन अमल शुरू कर सकते हे, वह आज से शुरू कर दे, और उस्का एहतिमाम करे.

अल्लाह के मेहबूब बन जावो

हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई (रह) फरमाते थे, की शौचालय या गुस्ल खाने में दाखिल हो रहे हो, बायाँ पाँव पहले दाखिल कर दो, और दाखिल होने से पहले ये दुआ पढ लो की "अल्लाहुम्म इन्नी अउजु बि-क मिनल खुबुसि वल खबाइसि" और ये नियत कर लो की ये काम में नबी करीमﷺ की इत्तीबा में कर रहा हूं, बस जिस वकत ये काम करोगे अल्लाह तआला की मेहबुबियत हासिल हो जाएगी, इसलिए की अल्लाह तआला ने कुरान करीम में फरमाया की "अगर तुम मेरी इत्तीबा करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हे अपना मेहबूब बनालेंगे" इसलिए अगर छोटे छोटे काम, सुन्नत का लिहाज़, करते हुए कर लिए जाए, बस

मेहबुबियत हासिल होने लगेगी, और सरापा इत्तीबा बन जाओगे तो कामिल मेहबूब हो जाओगे, हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब (रह) फरमाया करते थे की मैंने मुद्दतो इस बात की मेहनत और मश्क की हे की घर में दाखिल हुआ, खाना सामने रखा हुआ हे, भूख शिद्दत की लगी हुई हे, और खाने का दिल चाह रहा हे, लेकिन एक लम्हे के लिए रूक गए की खाना नहीं खायेंगे, फिर दूसरे लम्हे दिल में ये ख्याल लाए की नबी करीमﷺ की सुन्नत थी की जब आपके सामने अच्छा खाना आता था तो आप अल्लाह तआला का शुक्र अदा करके खा लेते थे, अब हम भी नबी करीमﷺ की इत्तीबा में खाना खायेंगे, इसलिए अब जो खाना खाया, वह नबी करीमﷺ की इत्तीबा में खाया, और उस पर अल्लाह तआला की मेहबुबियत भी हासिल हो गई, और तबीयत भी सैर हो गई.

ये अमल कर ले

घर में दाखिल हुए और बच्चा खेलता हुआ अच्छा मालूम हुआ, और दिल चाहा की उस्को गोद में उठाले, लेकिन एक

लम्हे को रूक गए की नहीं उठायेंगे, फिर दूसरे लम्हे दिल में ये ख्याल लाए की नबी करीमﷺ बच्चो पर शफ्कत फरमाते हुए उन्को गोद में उठा लिया करते थे, में भी आपकी इत्तीबा में बच्चे को गोद में उठाऊंगा, चुनांचे नबी करीमﷺ की इत्तीबा में जब बच्चे को उठाया तो ये अमल अल्लाह तआला की मेहबूबियत का ज़रिया बन गया, दुन्या का कोई ऐसा काम नहीं हे जिस्मे सुन्नत की इत्तीबा की नियत ना-कर सकते हो, आपकी सुन्नतो पर किताब छपी हुई हे "उसवाए रसूले अकरमﷺ" वह किताब सामने रख ले, एक-एक सुन्नत देखते जाए और अपनी ज़िन्दगी में दाखिल करते जाए, फिर देखोगे इन्शाअल्लाह इन सुन्नतो का कैसा नूर हासिल होता हे, और फिर तुम्हारा हर दिन सीरतुन्नबीﷺ का दिन होगा, और हर लम्हा सीरतुन्नबीﷺ का लम्हा होगा.

अल्लाह तआला मुझे और आप सब्को इसपर अमल करने की तौफीक अता फरमाए. आमीन.

इस्लाही खुतबात हिन्दी/२ [१५४-१७८] से मजमून का खुलासा.